DEEP LEVEL : 1

WHO IS KRISHNA

YASH
BALDANIYA

जब भी मैं कृष्ण के बारे में सोचता हूँ, मेरे मन में एक ही प्रश्न उठता है कि आखिर कोई मनुष्य अपने जीवन में इतने अलग-अलग रूपों को एक साथ कैसे जी सकता है? एक तरफ बचपन में माखन चुराने वाला नटखट बालक, दूसरी तरफ गोपियों के बीच बाँसुरी बजाने वाला प्रेममय व्यक्तित्व, कहीं अपने मित्रों के साथ हँसता हुआ एक साधारण ग्वाला, तो कहीं बड़े-बड़े योद्धाओं और राजाओं के सामने अपनी बुद्धि से परिस्थितियों की दिशा बदल देने वाला अद्भुत राजनीतिज्ञ। एक तरफ राधा के प्रेम में डूबा हुआ कृष्ण दिखाई देता है, तो दूसरी तरफ महाभारत के युद्ध में अर्जुन को जीवन के सबसे गहरे सत्य समझाने वाला कृष्ण। एक तरफ वे अत्यंत कोमल हैं, तो दूसरी तरफ आवश्यकता पड़ने पर कठोर निर्णय लेने से भी पीछे नहीं हटते

यही बात मुझे सबसे अधिक आकर्षित करती है कि कृष्ण को किसी एक परिभाषा में बंद नहीं किया जा सकता। हम अक्सर किसी व्यक्ति को समझने के लिए उसकी एक पहचान चुन लेते हैं। कोई अच्छा है तो हम उसे हमेशा अच्छा ही देखना चाहते हैं, कोई कठोर है तो उसके भीतर की कोमलता देखने की कोशिश नहीं करते। लेकिन कृष्ण का व्यक्तित्व इन सभी सीमाओं को तोड़ता दिखाई देता है। वे हमें बताते हैं कि जीवन केवल एक रंग का नहीं होता। मनुष्य के भीतर अनेक संभावनाएँ होती हैं और उन सभी को समझना ही शायद पूर्णता की शुरुआत है

कृष्ण का जन्म किसी साधारण परिस्थिति में नहीं हुआ था। उनका जन्म कारागार में हुआ, जहाँ उनके माता-पिता बंदी थे और चारों ओर भय का वातावरण था। जिस समय एक बालक को संसार में सबसे अधिक सुरक्षा की आवश्यकता होती है, उसी समय कृष्ण के जीवन की शुरुआत संकट के बीच हुई। लेकिन उनके जीवन की सबसे अद्भुत बात यह है कि कठिन परिस्थितियों ने उनके अस्तित्व को सीमित नहीं किया। वे जहाँ भी गए, वहाँ जीवन का एक नया अर्थ पैदा किया। गोकुल की गलियों में उनका बचपन केवल शरारतों की कहानी नहीं है, बल्कि यह उस सहजता का प्रतीक है जिसे मनुष्य बड़ा होते-होते खो देता है

बालक कृष्ण में एक ऐसी स्वतंत्रता दिखाई देती है जिसमें किसी प्रकार की बनावट नहीं है। वे जीवन को किसी गंभीर बोझ की तरह नहीं लेते। वे खेलते हैं, हँसते हैं, मित्र बनाते हैं और हर छोटी चीज में आनंद खोज लेते हैं। मुझे लगता है कि कृष्ण के बचपन को केवल चमत्कारों की दृष्टि से देखना पर्याप्त नहीं है। उसमें एक बहुत सुंदर संदेश छिपा है कि मनुष्य चाहे कितनी भी बड़ी जिम्मेदारी क्यों न निभाए, उसके भीतर का बालपन मरना नहीं चाहिए। उम्र बढ़ने के साथ हम अपने ऊपर इतनी पहचानें लाद लेते हैं कि सहज रहना भूल जाते हैं। हम हर समय गंभीर दिखाई देना चाहते हैं, हर बात में अपनी बुद्धिमत्ता साबित करना चाहते हैं और छोटी-छोटी खुशियों को अपने लिए महत्वहीन समझने लगते हैं

End of preview · Get the full book at bucketofbooks.in